

कृषि एवं व्यापारिक गतिविधियों में मुहूर्त शास्त्र की प्रासंगिकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Parhlad Singh Ahluwalia, Dr. Bhim Rao Ambedkar Law University, Jaipur, Rajasthan

सार (Abstract)

भारतीय कर्म-परंपरा में किसी कार्य का आरंभ केवल भौतिक तैयारी का विषय नहीं माना गया। उसके लिए "काल" की उपयुक्तता भी विचारणीय रही। इसी विचार का संस्थागत रूप मुहूर्त शास्त्र है, जो ज्योतिष की संहिता तथा होरा-परंपरा से विकसित हुआ और कृषि, यात्रा, गृह-निर्माण, विवाह और वाणिज्य जैसे कर्मों के आरंभ-काल का निर्धारण करता है। प्रस्तुत अध्ययन इस प्रश्न का परीक्षण करता है कि इक्कीसवीं सदी की कृषि और व्यापारिक गतिविधियों में मुहूर्त-परंपरा की प्रासंगिकता किस स्तर पर, किस प्रकार और किन सीमाओं के साथ सिद्ध होती है। अध्ययन में शास्त्रीय स्रोतों (कृषि-पराशर, वृक्षायुर्वेद, बृहत्संहिता, अर्थशास्त्र तथा मुहूर्त-ग्रंथों) का विश्लेषणात्मक पाठ-पठन किया गया है। साथ ही कृषि-खगोल, कृषि-जलवायु विज्ञान, व्यवहारिक वित्त और सामाजिक मनोविज्ञान के प्रकाशित अनुभवजन्य शोधों से उसकी तुलना की गई है। निष्कर्ष त्रि-स्तरीय हैं। पहला, मुहूर्त का वह अंश जो ऋतु, वर्षा-आरंभ और नक्षत्र-आधारित कैलेंडर से जुड़ा है, कृषि-कालगणना के रूप में परीक्षण-योग्य और व्यावहारिक रूप से उपयोगी है। दूसरा, ग्रह-स्थिति और व्यक्तिगत कुंडली से जुड़े शुभाशुभ दावों के पक्ष में प्रकाशित नियंत्रित अध्ययन अब तक सुदृढ़ प्रमाण नहीं देते। तीसरा, मुहूर्त का सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कार्य (अनिश्चितता में आत्मविश्वास, सामूहिक समन्वय और सांस्कृतिक निरंतरता) स्वतंत्र रूप से सार्थक है। अध्ययन परंपरा के न तो अंध-समर्थन का और न ही उसके सर्वथा निषेध का पक्षधर है। वह साक्ष्य-आधारित, परीक्षण-योग्य और पुनरुत्पादन-योग्य शोध-कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: मुहूर्त शास्त्र, पंचांग, कृषि-पराशर, वृक्षायुर्वेद, बुवाई-काल, व्यावसायिक शुभारंभ, चंद्र-चक्र, व्यवहारिक वित्त, लोक-कृषि ज्ञान

1. भूमिका

भारतीय सभ्यता में कृषि और वाणिज्य केवल आजीविका के साधन नहीं रहे। उन्हें सामाजिक व्यवस्था की धुरी माना गया। कौटिल्य ने "वार्ता" के अंतर्गत कृषि, पशुपालन और वाणिज्य को गिनाते हुए इन्हें राज्य की आर्थिक संरचना का आधार कहा है [3]। उसका मूल पाठ इस प्रकार है:

"कृषिपशुपाल्ये वाणिज्या च वार्ता" [3]

इन दोनों क्षेत्रों में एक साझा विशेषता है कि इनके परिणाम अनिश्चित परिस्थितियों में लिए गए आरंभ-निर्णयों पर टिकते हैं। किसान को पता नहीं होता कि बोया गया बीज किस वर्षा-प्रतिरूप से मिलेगा। व्यापारी को पता नहीं होता कि नई दुकान या नया लेखा-वर्ष किस माँग-स्थिति में खुलेगा। इसी अनिश्चितता के बीच परंपरा ने "कब आरंभ किया जाए" का प्रश्न केंद्र में रखा।

संस्कृत में "मुहूर्त" शब्द मूलतः दिन-रात के तीसवें भाग, अर्थात् लगभग अड़तालीस मिनट की कालावधि का वाचक है। कालांतर में यह किसी कर्म के लिए शुभ मानी गई कालावधि का पर्याय बन गया [1,2]। मुहूर्त-विचार की आधार-इकाई पंचांग है, जिसके पाँच अंग परंपरा में इस प्रकार बताए जाते हैं:

"तिथिवारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च।"

अर्थात् तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण। धर्मशास्त्र के इतिहासकार पी. वी. काणे ने मुहूर्त-विचार का व्यवस्थित विवेचन धर्मशास्त्र-परंपरा के अंतर्गत किया है [1]। डेविड पिंग्री का ज्योतिष-साहित्य का सर्वेक्षण इस विधा के ग्रंथ-क्रम और काल-निर्धारण का आधार-स्रोत है [2]। उनके अनुसार वराहमिहिर जैसे आचार्यों के ग्रंथों में यात्रा आदि कर्मों के काल-विचार की परंपरा पर्याप्त पुरानी है, और मध्यकालीन निबंध-ग्रंथों में वह विस्तृत रूप में संकलित हुई [2]।

आधुनिक संदर्भ में इस विषय पर दो चरम स्थितियाँ दिखती हैं। एक ओर मुहूर्त को निर्विवाद विज्ञान मानने वाली श्रद्धा-आधारित दृष्टि है। दूसरी ओर उसे अंधविश्वास कहकर पूर्णतः अस्वीकार करने वाली दृष्टि है। दोनों में साक्ष्य-आधारित विश्लेषण का अभाव है। वास्तविकता इन दोनों के बीच जटिल है, क्योंकि मुहूर्त-परंपरा में कैलेंडर-गणना, कृषि-मौसम का लोकविज्ञान, ज्योतिषीय फल-दावे और सांस्कृतिक अनुष्ठान एक साथ गुंथे हैं। इनका मूल्यांकन एक ही कसौटी से करना पद्धतिगत भूल होगी। विज्ञान-दर्शन में ज्योतिष की छद्म-विज्ञान संबंधी बहस इसी "अलग-अलग दावों के अलग-अलग परीक्षण" की आवश्यकता को रेखांकित करती है [14]।

भाषा, संस्कार और संस्कृति के समाजशास्त्रीय अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि भारतीय समाज में संस्कार केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि सामाजिक निरंतरता और मूल्य-संचरण की प्रणाली हैं [7,8,9]। किसी कर्म को शुभ क्षण में आरंभ करने की प्रवृत्ति इसी सांस्कृतिक संरचना का हिस्सा है। यह तथ्य मुहूर्त के मूल्यांकन में केवल "सही/गलत" की द्विआधारी कसौटी को अपर्याप्त बना देता है।

2. शोध-समस्या, उद्देश्य एवं शोध-प्रश्न

शोध-समस्या। कृषि और व्यापार में मुहूर्त का व्यापक व्यवहार होने के बावजूद हिंदी अकादमिक साहित्य में इसकी तीन स्तरों (पाठ-आधारित, अनुभवजन्य और सामाजिक) पर एकीकृत और तुलनात्मक जाँच प्रायः नहीं मिलती। अधिकांश लेखन या तो पुरातन ग्रंथों के पुनर्कथन तक सीमित है या मुहूर्त का सामान्य खंडन-मंडन करता है।

उद्देश्य

- मुहूर्त शास्त्र की अवधारणा और पंचांग-आधारित काल-गणना की शास्त्रीय संरचना का विश्लेषण करना।
- कृषि और व्यापार से संबंधित प्रमुख शास्त्रीय निर्देशों की पहचान और वर्गीकरण करना।
- इन निर्देशों की तुलना कृषि-विज्ञान, वित्त और मनोविज्ञान के प्रकाशित अनुभवजन्य साक्ष्य से करना।
- मुहूर्त-परंपरा के परीक्षण-योग्य और अपरीक्षित अंशों में भेद करना।
- भविष्य के क्षेत्र-अध्ययन के लिए शोध-रूपरेखा प्रस्तावित करना।

शोध-प्रश्न

- RQ1: शास्त्रों में कृषि और वाणिज्य के लिए काल-निर्धारण के कौन-से सिद्धांत मिलते हैं?
- RQ2: क्या इनमें से कोई अंश आधुनिक कृषि-विज्ञान में स्थापित बुवाई-काल सिद्धांतों से सुसंगत है?
- RQ3: चंद्र-चक्र, मौसम और बाजार-व्यवहार पर प्रकाशित अनुभवजन्य अध्ययन मुहूर्त-दावों के बारे में क्या संकेत देते हैं?
- RQ4: मुहूर्त का मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्य क्या है?

3. शोध-पद्धति

3.1 अध्ययन-प्रारूप

यह अध्ययन विवरणात्मक-विश्लेषणात्मक समीक्षा (narrative analytical review) है। रिपोर्टिंग की पारदर्शिता के लिए PRISMA 2020 कथन [10] और स्कोपिंग-समीक्षाओं के लिए PRISMA-ScR [11] की मूल भावना अपनाई गई है। इसमें खोज-रणनीति का स्पष्ट उल्लेख, समावेशन और अपवर्जन की कसौटियाँ, और स्रोत-चयन का तर्क शामिल हैं। यह औपचारिक व्यवस्थित समीक्षा नहीं है, क्योंकि इसमें डेटाबेस-आधारित मात्रात्मक छँटाई और मेटा-विश्लेषण नहीं किया गया। इसलिए इसमें कोई पहचानित/छाँटित अभिलेखों की संख्या का दावा नहीं किया गया है। यह चयन स्वयं एक सीमा है, जिसे खंड 11 में स्वीकार किया गया है।

3.2 स्रोत-श्रेणियाँ

श्रेणी	उद्देश्य	उदाहरण
(क) प्राथमिक शास्त्रीय स्रोत	मुहूर्त-निर्देशों का पाठ-आधार	कृषि-पराशर, वृक्षायुर्वेद, बृहत्संहिता, अर्थशास्त्र
(ख) शास्त्र-इतिहास संबंधी द्वितीयक स्रोत	ग्रंथ-क्रम, काल-निर्धारण	काणे, पिंग्री
(ग) अनुभवजन्य अध्ययन	निर्देशों की तथ्य-जाँच	कृषि-खगोल, कृषि-मौसम, वित्त के शोध
(घ) सांस्कृतिक एवं सामाजिक अध्ययन	संस्कार-परंपरा का संदर्भ	संदर्भ 7, 8, 9

3.3 समावेशन एवं अपवर्जन कसौटी

समावेशन-कसौटियाँ ये रहीं: (i) प्रकाशन-वर्ष 2024 या उससे पहले; (ii) कृषि-काल, चंद्र-सौर चक्र, मौसम-प्रभाव, वित्तीय बाज़ार-व्यवहार या अंधविश्वास-मनोविज्ञान से सीधा संबंध; (iii) सहकर्मी-समीक्षित जर्नल, मान्य शोध-पुस्तक या मानक शास्त्र-संस्करण में प्रकाशन। अपवर्जन-कसौटियाँ ये रहीं: (i) 2025 या उसके बाद के प्रकाशन; (ii) बिना पद्धति-विवरण वाले लोकप्रिय लेख; (iii) विषय से असंबद्ध होते हुए केवल संख्या बढ़ाने हेतु उद्धृत किए जा सकने वाले स्रोत।

3.4 विश्लेषण-ढाँचा

प्राप्त सामग्री का विश्लेषण पाँच दृष्टियों से किया गया: (1) शास्त्रीय पाठ-परक, (2) कृषि-वैज्ञानिक, (3) आर्थिक-वित्तीय, (4) मनोवैज्ञानिक, (5) सामाजिक-सांस्कृतिक। प्रत्येक दावे को तीन श्रेणियों में रखा गया: परीक्षण-योग्य और आंशिक रूप से समर्थित, परीक्षण-योग्य पर अपुष्ट/विरोधी साक्ष्य वाला, और परीक्षण-योग्य नहीं, किंतु सामाजिक कार्य-युक्त।

3.5 शोध-नैतिकता एवं मौलिकता

सामाजिक विज्ञान शोध में स्रोत की ईमानदार स्वीकृति, पारदर्शी पद्धति और साक्ष्य के निष्पक्ष प्रस्तुतीकरण जैसे नैतिक सिद्धांत लागू होते हैं [12]। मूल पाठ का लेखन अपने शब्दों में किया गया है और उद्धरण सीमित तथा स्रोत-संदर्भित हैं। साहित्यिक चोरी की रोकथाम और जाँच-तकनीकों पर उपलब्ध विवेचन इस दिशा में सहायक है [13]।

4. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि: मुहूर्त की अवधारणा एवं पंचांग

4.1 काल-बोध और कर्म

भारतीय चिंतन में काल केवल सतत प्रवाह नहीं, बल्कि गुणात्मक रूप से भिन्न खंडों का क्रम है। इसी धारणा से यह विश्वास बना कि भिन्न कर्म भिन्न कालखंडों में अधिक फलदायी हो सकते हैं। काणे के अनुसार धर्मशास्त्रीय निबंधों में उपनयन, विवाह, गृहप्रवेश, यात्रा और कृषि-संबंधी आरंभ जैसे कर्मों के लिए काल-विधान विस्तृत रूप से मिलता है [1]।

4.2 पंचांग के घटक

पंचांग का आधार चंद्र-सौर कालगणना है। भारतीय कैलेंडर-प्रणालियों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण दर्शाता है कि तिथि चंद्र और सूर्य के कोणीय अंतर पर, नक्षत्र चंद्रमा की तारा-पृष्ठभूमि में स्थिति पर, और वार सात-दिवसीय चक्र पर आधारित है [15]। स्वतंत्र भारत में गठित कैलेंडर-सुधार समिति ने इन प्रणालियों की विविधता और क्षेत्रीय विसंगतियों का विस्तृत आकलन किया और खगोलीय आधार पर एकरूप राष्ट्रीय कैलेंडर की सिफारिश की [16]। यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि पंचांग का गणितीय-खगोलीय भाग (तिथि, नक्षत्र, ग्रहण आदि की गणना) वैज्ञानिक रूप से सत्यापन-योग्य है। जो अंश सत्यापन-योग्य नहीं है, वह उसके साथ जुड़े फल-निर्देश हैं।

4.3 मुहूर्त-साहित्य का विकास

पिंग्री के सर्वेक्षण के अनुसार ज्योतिष-साहित्य संहिता, होरा और गणित-सिद्धांत की धाराओं में विकसित हुआ [2]। मुहूर्त-विषयक सामग्री इन धाराओं के संगम पर स्थित है। वराहमिहिर के संहिता-ग्रंथ (बृहत्संहिता) में वर्षा, शकुन, वृक्ष-रोपण और वास्तु जैसे विषयों के साथ काल-विचार की पर्याप्त सामग्री है [6]। परवर्ती मध्यकालीन निबंध-ग्रंथों, जैसे मुहूर्तचिंतामणि और उसकी टीका परंपरा, ने विभिन्न कर्मों के लिए मुहूर्त-नियम का संकलन किया [1,2]। इन ग्रंथों की सामग्री अधिकांशतः नियम-सूचियों के रूप में है और उसके पीछे के अनुभवजन्य आधार का व्यवस्थित प्रमाण ग्रंथों में प्रायः नहीं दिया गया है। यह तथ्य आलोचनात्मक पाठ-पठन के लिए प्रस्थान-बिंदु है।

5. शास्त्रीय स्रोतों में कृषि और व्यापार संबंधी काल-निर्देश

5.1 कृषि: पराशर-परंपरा

कृषि-पराशर संस्कृत में कृषि-विज्ञान का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसका संपादित और अनूदित संस्करण (टिप्पणियों सहित) कृषि-इतिहास शोध-शृंखला में उपलब्ध है, जिसमें मौसम-विज्ञान संबंधी और सामान्य कृषि-संबंधी टिप्पणियाँ भी सम्मिलित हैं [4]। ग्रंथ में कृषि की प्रतिष्ठा को लेकर परंपरागत रूप से यह भाव उद्धृत किया जाता है:

"कृषिर्धन्या कृषिर्मध्या जन्तूनां जीवनं कृषिः।"

(यह पंक्ति परंपरा में कृषि-पराशर से उद्धृत की जाती है। प्रकाशन से पूर्व इसका मिलान उक्त संस्करण [4] के मूल पाठ से अवश्य करें।)

ग्रंथ का एक विशिष्ट पक्ष वर्षा-पूर्वानुमान और काल-आधारित कृषि-निर्देश है। उसमें वर्षा के लक्षणों, ग्रहों-नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर वर्षा के संकेतों और हल-चालन तथा बुवाई जैसे कृषि-कर्मों के समय का वर्णन मिलता है [4]। इस सामग्री पर वर्षा-

विज्ञान की दृष्टि से की गई टिप्पणियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि लोक-आधारित मौसम-संकेतों का आकलन आधुनिक मौसम-विज्ञान के प्रकाश में अलग से किया जाना चाहिए [4]।

5.2 कृषि: वृक्षायुर्वेद

सुरपाल कृत वृक्षायुर्वेद (लगभग दसवीं शताब्दी के आसपास का माना जाने वाला ग्रंथ) उसी श्रृंखला में अनूदित और टिप्पणी-सहित उपलब्ध है [5]। इसमें बीज-चयन, बीज-उपचार, रोपण-विधि और पौध-संरक्षण का वर्णन है। रोपण और बीजारोपण के लिए नक्षत्र-आधारित काल-निर्देश इस परंपरा में मिलते हैं [5]। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि ग्रंथ का बड़ा भाग (बीज-उपचार, मृदा-पोषण और जल-प्रबंधन) अनुभव-आधारित कृषि-तकनीक है, जिसका परीक्षण कृषि-विज्ञान की सामान्य कसौटियों से किया जा सकता है। नक्षत्र-आधारित काल-निर्देश इसका केवल एक अंश है।

5.3 संहिता-परंपरा: बृहत्संहिता

बृहत्संहिता में वर्षा-गर्भ-लक्षण और उससे वर्षा तथा शस्य-फल का अनुमान, शकुन, वृक्षायुर्वेद और जल-अन्वेषण जैसे विषय मिलते हैं [6]। इनमें से कई सामग्री वस्तुतः लोक-अवलोकन का संकलन है, जैसे बादल, वायु और आकाशीय चिह्नों से वर्षा का अनुमान। भट्ट के अंग्रेजी अनुवाद में इस सामग्री का सुलभ पाठ उपलब्ध है [6]। इस अंश को दो भागों में बाँटकर देखा जाना चाहिए: (क) प्रत्यक्ष मौसम-अवलोकन, जिसका मूल्यांकन मौसम-विज्ञान कर सकता है; और (ख) ग्रह-योग के आधार पर फल-कथन, जिसका परीक्षण अलग पद्धति माँगता है।

5.4 अर्थशास्त्र: राज्य, कृषि और वाणिज्य

कौटिल्य का अर्थशास्त्र "सीताध्यक्ष" प्रकरण में राज्य-कृषि के प्रबंधन का वर्णन करता है, जिसमें वर्षा-माप के आधार पर बुवाई की योजना का संकेत भी मिलता है [3]। यह इसलिए उल्लेखनीय है कि यहाँ काल-निर्णय का आधार मापित वर्षा है, कोई ग्रह-स्थिति नहीं। यह मुहूर्त-परंपरा के भीतर ही अनुभव-आधारित और ज्योतिष-आधारित काल-विचार के बीच भेद की ओर संकेत करता है। वाणिज्य के संबंध में अर्थशास्त्र का मुख्य सरोकार मूल्य-निर्धारण, मार्ग-सुरक्षा और राजस्व है [3]। उसमें व्यापारिक शुभारंभ की ज्योतिषीय विधियाँ केंद्रीय विषय नहीं हैं। व्यापार-मुहूर्त का विस्तार अधिकांशतः परवर्ती निबंध-परंपरा और लोक-व्यवहार में हुआ [1,2]।

5.5 एक प्राचीन तुलनात्मक संकेत: ऋग्वैदिक परिप्रेक्ष्य

ऋग्वेद के अक्ष-सूक्त में जुए की निंदा करते हुए कृषि की ओर लौटने का उपदेश मिलता है:

"अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमिह कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।"

(ऋग्वेद 10.34.13)

यह पंक्ति कृषि को नैतिक, श्रम-आधारित और सम्मान्य संपत्ति-अर्जन का मार्ग मानने की प्राचीन दृष्टि दर्शाती है। इसके पाठ-संदर्भ का मिलान किसी प्रामाणिक वैदिक संस्करण से अवश्य कर लें। इस संदर्भ का महत्त्व यह है कि कृषि और अर्थ-व्यवहार की नैतिक प्रतिष्ठा मुहूर्त-परंपरा से पहले की है। मुहूर्त-विचार ने इसी प्रतिष्ठित कर्म के प्रबंधन की एक विधि के रूप में विकास किया।

5.6 तालिका 1: शास्त्रीय स्रोतों में कृषि एवं वाणिज्य संबंधी काल-निर्देश (विश्लेषणात्मक सारांश)

क्र.	स्रोत	प्रमुख काल-संबंधी सामग्री	निर्देश का आधार (विश्लेषक का वर्गीकरण)	आधुनिक समकक्ष क्षेत्र
1	कृषि-पराशर [4]	वर्षा-लक्षण, हल-चालन और बुवाई का समय	अवलोकन-आधारित तथा ज्योतिष-आधारित, दोनों	मानसून-पूर्वानुमान, बुवाई-तिथि निर्धारण
2	वृक्षायुर्वेद [5]	बीज-उपचार, रोपण; नक्षत्र-आधारित काल	मुख्यतः तकनीकी अनुभव, कुछ अंश नक्षत्र-आधारित	बीज-विज्ञान, रोपण-तिथि
3	बृहत्संहिता [6]	वर्षा-गर्भ-लक्षण, शकुन, जल-अन्वेषण	मौसम-अवलोकन तथा ग्रह-योग फल-कथन	लोक-मौसम विज्ञान
4	अर्थशास्त्र [3]	वर्षा-माप और बुवाई-योजना; वार्ता का महत्त्व	मापित वर्षा-आधारित प्रशासनिक	कृषि-नीति, जोखिम-नियोजन
5	मुहूर्त-निबंध परंपरा [1,2]	विभिन्न कर्मों (यात्रा, गृहारंभ आदि) हेतु तिथि-वार-नक्षत्र-नियम	मुख्यतः ज्योतिष-सिद्धांत-आधारित	परीक्षण-योग्य परिकल्पनाएँ (खंड 8)

6. संबंधित शोध की समीक्षा एवं उनके परिणाम

इस खंड में उन प्रकाशित अनुभवजन्य अध्ययनों की समीक्षा की गई है जो मुहूर्त के कृषि और व्यापार संबंधी दावों से तार्किक रूप से जुड़े हैं। ध्यान रहे कि ये अध्ययन "मुहूर्त" पर सीधे प्रयोग नहीं हैं। वे चंद्र-चक्र, मौसम, पारंपरिक खगोल-ज्ञान और मानव-व्यवहार जैसे अंतर्निहित कारकों का परीक्षण करते हैं।

6.1 कृषि: बुवाई-काल का महत्त्व

बुवाई-काल कृषि-उत्पादकता का स्थापित निर्धारक है। सैक्स और सहयोगियों ने विश्व-स्तर पर अनेक फसलों के रोपण-काल के वैश्विक प्रतिरूपों का विश्लेषण प्रस्तुत किया और दिखाया कि रोपण-तिथियाँ तापमान, वर्षा और सिंचाई-उपलब्धता जैसे जलवायविक कारकों से गहराई से जुड़ी हैं [17]। भारतीय संदर्भ में गाडगिल और सहयोगियों ने दक्षिण भारत में वर्षा-आधारित मूँगफली की खेती में जलवायु-सूचना के आधार पर बुवाई-निर्णयों के लाभ का अध्ययन किया। इसमें वर्षा-आरंभ के आधार पर बुवाई-काल के चयन से उपज-जोखिम को कम करने की संभावना दर्शाई गई [18]। इन अध्ययनों का निष्कर्ष स्पष्ट है कि "कब बोया जाए" का निर्णय निर्णायक है, और यह निर्णय मौसम-आधारित सूचना पर आधारित हो तो उसका आर्थिक मूल्य है। यह मुहूर्त-परंपरा की मूल अंतर्दृष्टि (काल का महत्त्व) की आधुनिक विज्ञान में स्वतंत्र पुष्टि है। पर यह पुष्टि केवल इस अंतर्दृष्टि की है, "कौन-सा नक्षत्र" या "कौन-सा ग्रह" जैसे विशिष्ट नियमों की नहीं।

6.2 पारंपरिक खगोल-ज्ञान का अनुभवजन्य परीक्षण: एक सफल उदाहरण

ऑरलोव, चियांग और केन ने एंडीज के किसानों की उस परंपरा का परीक्षण किया जिसमें जून में कृत्तिका-समूह (Pleiades) की दृश्यता के आधार पर आगामी वर्षा और आलू-बुवाई के समय का निर्णय लिया जाता है। उन्होंने पाया कि यह दृश्यता एल नीनो-संबंधी उच्च-स्तरीय पतले बादलों से प्रभावित होती है, इसलिए यह आगामी वर्षा और उपज का पूर्वानुमान देने में सहायक है [20]। यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि कोई पारंपरिक खगोल-आधारित कृषि-नियम बिना पूर्वग्रह के वैज्ञानिक परीक्षण में तर्कसंगत भौतिक आधार पर खरा उतर सकता है। साथ ही यह भी दिखाता है कि सफलता का कारण खगोलीय पिंड का "प्रभाव" नहीं, बल्कि दृश्यता के माध्यम से मौसम-संकेतक का काम करना था। इसका तात्पर्य यह है कि मुहूर्त के नक्षत्र-आधारित कृषि-नियमों

की जाँच के लिए भी यही पद्धति अपनाई जा सकती है: पहले यह देखना कि क्या नियम किसी मापन-योग्य मौसम-संकेतक से जुड़ता है।

6.3 चंद्र-चक्र और पौधों का वृद्धि-व्यवहार

कोलरस्ट्रॉम और स्टाउडेनमायर ने चंद्र-सौर लय और फसल-उपज से संबंधित प्रकाशित प्रयोगों की समीक्षा की। उन्होंने कुछ अध्ययनों में चंद्र-चरण से संबद्ध उपज-भिन्नता के संकेत बताए, किंतु साथ ही प्रयोगों की विषमता और पद्धतिगत सीमाओं की ओर भी ध्यान दिलाया [21]। इसी संदर्भ में ज़ुर्चर और सहयोगियों ने वृक्षों के तने के व्यास में चंद्र-ज्वारीय चक्र से संबद्ध उतार-चढ़ाव की सूचना दी [22]। इन दोनों का संयुक्त पाठ यह है कि चंद्र-चक्र और वनस्पति-शरीरक्रिया के बीच कुछ मापन-योग्य संबंध **संभव** हैं, परंतु (क) तने के व्यास का उतार-चढ़ाव आर्थिक उपज से भिन्न है, और (ख) चंद्र-चरण का यह प्रभाव मुहूर्त के विशिष्ट तिथि-नक्षत्र-नियमों की पुष्टि नहीं करता। निष्कर्षतः यह क्षेत्र "परीक्षणाधीन" है, "सिद्ध" नहीं।

6.4 व्यापार: चंद्र-चक्र और बाज़ार-प्रतिफल

डिचेव और जेन्स ने कई देशों के शेयर-सूचकांकों में चंद्र-चक्र के प्रभाव का अध्ययन किया। उनके अनुसार नव-चंद्र के आसपास की अवधि में प्रतिफल पूर्ण-चंद्र के आसपास की अवधि की तुलना में काफी ऊँचे पाए गए [24]। युआन, झेंग और झू ने अड़तालीस देशों के आँकड़ों पर अध्ययन करके बताया कि पूर्ण-चंद्र के आसपास प्रतिफल नव-चंद्र की तुलना में लगभग 3 से 5 प्रतिशत वार्षिक-दर से कम रहे, और यह अंतर व्यापार-मात्रा या अस्थिरता से स्पष्ट नहीं होता [25]। ये निष्कर्ष विश्व-स्तर पर चर्चित हैं, किंतु वित्त-साहित्य में उनकी व्याख्या मूलतः **निवेशक-मनोदशा** पर टिकी है, ग्रह-शक्ति पर नहीं [25]। साथ ही यह भी स्मरणीय है कि ऐसे "कैलेंडर-अपसामान्यताएँ" (calendar anomalies) प्रकाशन के बाद कमजोर पड़ सकती हैं और डेटा-माइनिंग का जोखिम रखती हैं।

मौसम और बाज़ार के संबंध पर हिर्शलीफ़र और शूमवे ने 26 अंतर्राष्ट्रीय एक्सचेंजों के आँकड़ों में प्रातःकालीन धूप और शेयर-प्रतिफल के बीच सकारात्मक संबंध पाया [26]। सॉन्डर्स ने न्यूयॉर्क में बादलों से भरे दिनों में शेयर-प्रतिफल के कम रहने की सूचना दी [27]। कैमस्ट्रा, क्रेमर और लेवी ने मौसमी भावनात्मक विकार (SAD) की परिकल्पना के आधार पर पतझड़ के महीनों में कम प्रतिफल का प्रतिरूप प्रस्तुत किया [28]। इन सबका सार यह है कि **मनोदशा-जनित बाज़ार-प्रभाव** वास्तविक हो सकता है, और यह प्रभाव खगोलीय या मौसमी चक्रों से सहसंबद्ध दिखाई दे सकता है, बिना किसी ग्रह-शक्ति की आवश्यकता के।

6.5 ज्योतिषीय दावों का नियंत्रित परीक्षण

कार्लसन ने ज्योतिषियों पर दोहरे-अंध (double-blind) प्रयोग में परीक्षण किया कि क्या वे जन्म-कुंडली से व्यक्तित्व-प्रोफ़ाइल का सही मिलान कर सकते हैं। परिणाम संयोग-स्तर के निकट पाए गए, अर्थात् लगभग एक-तिहाई की संभाव्यता के निकट [23]। यह अध्ययन व्यक्तिगत कुंडली-आधारित दावों से संबंधित है, मुहूर्त से सीधे नहीं। फिर भी यह उस श्रेणी के ज्योतिषीय फल-कथन के प्रति सावधानी का संकेत देता है, और यह सिद्ध करता है कि ऐसे दावे कठोर पद्धति से परीक्षण-योग्य हैं। थैगार्ड का विज्ञान-दर्शन संबंधी विश्लेषण ज्योतिष को छद्म-विज्ञान इसलिए कहता है कि उसमें सिद्धांत की प्रगति और विफलताओं के प्रति सुधार का अभाव रहा [14]। इस आलोचना का उत्तर परंपरा के आंतरिक सुधार और परीक्षण-योग्य परिकल्पनाओं की स्वीकृति से ही संभव है।

6.6 अनिश्चितता, अंधविश्वास और प्रदर्शन: मनोवैज्ञानिक शोध

मालिनोव्स्की के क्लासिक नृवंशविज्ञान-अध्ययन में यह प्रेक्षण दर्ज है कि ट्रोब्रियांड द्वीपवासी खतरनाक खुले समुद्र की मछली-पकड़ में जादू-अनुष्ठान अपनाते थे, जबकि सुरक्षित लैगून में नहीं। इससे उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि अनुष्ठान अनिश्चितता और चिंता को प्रबंधित करने का कार्य करते हैं [29]। लैंगर ने "नियंत्रण के भ्रम" की अवधारणा प्रस्तुत की और दिखाया कि लोग यादृच्छिक परिणामों पर भी नियंत्रण का अनुभव अपनी भागीदारी से करने लगते हैं [30]। दामिश, स्टोबेरोक और मुस्वीलर ने प्रयोगों में दिखाया कि "भाग्य-वर्धक" अंधविश्वास की सक्रियता से आत्म-प्रभावकारिता और कार्य-प्रदर्शन में सुधार आया [31]। ट्वस्की और कन्नमन ने अनिश्चितता के अंतर्गत निर्णय में मानसिक शॉर्टकट (heuristics) और पूर्वाग्रहों की भूमिका का सिद्धांत दिया [32]। इन सबके संयुक्त निहितार्थ यह हैं कि मुहूर्त का पालन अनिश्चित क्षेत्रों (कृषि और व्यापार) में चिंता-नियमन और आत्मविश्वास-वर्धन का कार्य कर सकता है, और यह प्रभाव ग्रह-फल की सत्यता से स्वतंत्र है।

6.7 तालिका 2: संबंधित शोधों का तुलनात्मक सारांश

क्र.	अध्ययन (संदर्भ)	क्षेत्र	रिपोर्ट किया गया मुख्य परिणाम (संक्षेप)	मुहूर्त-दावों के लिए निहितार्थ	सीमाएँ
1	सैक्स एवं अन्य (2010) [17]	कृषि	रोपण-तिथियाँ जलवायविक कारकों से गहराई से जुड़ी	काल-निर्णय की प्रासंगिकता की पुष्टि	विशिष्ट नक्षत्र-नियमों का परीक्षण नहीं
2	गाडगिल एवं अन्य (2002) [18]	कृषि (भारत)	जलवायु-सूचना आधारित बुवाई से जोखिम में कमी की संभावना	वर्षा-आधारित काल-चयन उपयोगी	एक फसल, एक क्षेत्र
3	ऑरलोव एवं अन्य (2000) [20]	पारंपरिक खगोल-ज्ञान	कृत्तिका-दृश्यता वर्षा और उपज का सूचक	पारंपरिक खगोल-नियम परीक्षण-योग्य, आंशिक पुष्टि संभव	भौतिक माध्यम स्पष्ट, ग्रह-प्रभाव नहीं
4	कोलरस्ट्रॉम एवं स्टाउडेनमायर (2001) [21]	चंद्र-सौर लय और उपज	कुछ प्रयोगों में संबंध के संकेत, पर विषम	परीक्षणाधीन क्षेत्र	पद्धतिगत विषमता
5	जुर्चर एवं अन्य (1998) [22]	वृक्ष-शरीरक्रिया	तने के व्यास में चंद्र-ज्वारीय उतार-चढ़ाव की सूचना	चंद्र-वनस्पति संबंध की भौतिक संभावना	उपज से सीधा संबंध नहीं
6	डिचेव एवं जेन्स (2003) [24]	वित्त	नव-चंद्र के आसपास अधिक प्रतिफल	बाज़ार-व्यवहार में चंद्र-प्रतिरूप की रिपोर्ट	डेटा-माइनिंग का जोखिम
7	युआन एवं अन्य (2006) [25]	वित्त (48 देश)	पूर्ण-चंद्र के आसपास कम प्रतिफल (लगभग 3 से 5% वार्षिक अंतर)	चंद्र-प्रतिरूप की क्रॉस-कंट्री रिपोर्ट	कारण-व्याख्या मनोदशा-आधारित
8	हिर्शलीफ़र एवं शूमवे (2003) [26]	वित्त (26 एक्सचेंज)	धूप और प्रतिफल में सकारात्मक संबंध	मौसम-जनित मनोदशा बाज़ार को प्रभावित करती है	प्रभाव का आर्थिक आकार सीमित

9	कार्लसन (1985) [23]	ज्योतिष का नियंत्रित परीक्षण	मिलान संयोग-स्तर के निकट	कुंडली-आधारित दावों हेतु अपुष्ट	मुहूर्त का प्रत्यक्ष परीक्षण नहीं
10	दामिश एवं अन्य (2010) [31]	मनोविज्ञान	अंधविश्वास की सक्रियता से प्रदर्शन में सुधार	मुहूर्त के मनोवैज्ञानिक कार्य को समर्थन	प्रयोगशाला-आधारित

7. बहु-आयामी विश्लेषण

7.1 शास्त्रीय पाठ-परक दृष्टि

शास्त्रीय स्रोतों की समीक्षा से दो स्तर प्रकट होते हैं। पहला स्तर कृषि-तकनीक और मौसम-अवलोकन का है, जिसमें निर्देश अनुभव-आधारित और परीक्षण-योग्य हैं [3,4,5]। दूसरा स्तर ग्रह-नक्षत्र-आधारित शुभाशुभ-फल का है, जो मुहूर्त-निबंध परंपरा में विस्तृत हुआ [1,2]। परंपरा के भीतर ही अर्थशास्त्र जैसे स्रोत में वर्षा-माप पर आधारित काल-निर्णय का उदाहरण मिलता है [3], जो दर्शाता है कि "काल-विचार" का अर्थ हमेशा ज्योतिषीय नहीं था।

7.2 कृषि-वैज्ञानिक दृष्टि

कृषि-विज्ञान की दृष्टि से मुहूर्त की मूल अंतर्दृष्टि (कि कर्म का आरंभ-काल निर्णायक है) स्थापित है [17,18]। पर मुहूर्त का ज्योतिषीय ढाँचा "सब किसानों के लिए एक ही तिथि-नक्षत्र" जैसा सार्वभौम नियम देता है, जबकि बुवाई का इष्टतम समय स्थान, मिट्टी, किस्म और वर्षा-प्रतिरूप पर निर्भर करता है [17,18]। इसलिए व्यावहारिक रूप से मुहूर्त तभी लाभदायक हो सकता है जब वह स्थानीय मौसम-सूचना का विकल्प नहीं, पूरक बने। यह विश्लेषण निम्न बिंदु पर आकर टिकता है: परंपरागत नक्षत्र-आधारित कैलेंडर का मूल्य तभी है जब उसे मौसम-संकेतकों और स्थानीय अनुभव से जोड़कर परखा जाए, जैसा ऑरलटोव के अध्ययन में हुआ [20]।

7.3 आर्थिक-वित्तीय दृष्टि

वित्त-साहित्य में चंद्र-चक्र और मौसम-आधारित प्रतिफल-प्रतिरूपों की रिपोर्टें हैं [24,25,26,27,28]। उनकी स्वीकृत व्याख्या निवेशक-मनोदशा और व्यवहारिक पूर्वाग्रह पर टिकी है। इसका अर्थ यह है कि यदि व्यापारी समुदाय किसी तिथि पर सामूहिक रूप से शुभारंभ को अधिक महत्व देता है, तो उस तिथि पर बाजार-गतिविधि का सामूहिक समन्वय एक **स्व-पूर्तिकारी (self-fulfilling)** प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। यह एक परिकल्पना है, जिसका भारतीय बाजार के संदर्भ में व्यवस्थित परीक्षण आवश्यक है। इस अध्ययन में उसका कोई अनुभवजन्य दावा नहीं किया गया है।

7.4 मनोवैज्ञानिक दृष्टि

अनिश्चितता के अंतर्गत अनुष्ठान, अंधविश्वास और नियंत्रण-भ्रम चिंता-नियमन में सहायक होते हैं [29,30,31]। कृषि (मौसम-निर्भर) और व्यापार (माँग-निर्भर) दोनों उच्च-अनिश्चितता वाले क्षेत्र हैं, इसलिए मुहूर्त का पालन निर्णय-लेने की चिंता को कम कर सकता है। साथ ही निर्णय-सिद्धांत यह चेतावनी भी देता है कि वही पूर्वाग्रह (heuristics) अनुपयुक्त निर्णयों का कारण भी बन सकते हैं [32]। उदाहरण के लिए, यदि मुहूर्त की प्रतीक्षा में किसान इष्टतम बुवाई-काल गँवा दे, तो परंपरा का पालन आर्थिक हानि भी ला सकता है। इस द्वि-आयामी जोखिम का सम्यक् मूल्यांकन आवश्यक है।

7.5 सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि

भाषा, संस्कार और संस्कृति पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण दर्शाते हैं कि संस्कार-परंपराएँ सामाजिक संगठन, पहचान और मूल्य-संचरण का साधन हैं [7,8,9]। मुहूर्त का सामूहिक पालन कृषक-समुदायों में कार्य-आरंभ का सामूहिक समन्वय (जैसे सामूहिक बुवाई या मंडी-आरंभ) संभव बना सकता है। इसी प्रकार व्यापारिक समुदायों में नए खाता-वर्ष या प्रतिष्ठान के शुभारंभ का अनुष्ठान सामाजिक पूँजी और विश्वास का निर्माण करता है। यह कार्य ग्रह-फल की वैधता से स्वतंत्र है। इसलिए सांस्कृतिक दृष्टि से मुहूर्त की प्रासंगिकता "सही या गलत" की जगह "क्या कार्य करता है" के प्रश्न से परखी जानी चाहिए।

7.6 विज्ञान-दर्शन की दृष्टि

थैगार्ड की कसौटी के अनुसार किसी विधा के वैज्ञानिक कहलाने के लिए उसमें सैद्धांतिक प्रगति और असफलता से सीखने की प्रवृत्ति आवश्यक है [14]। मुहूर्त-परंपरा के लिए इसका अर्थ यह है कि उसे (क) अपने दावों को परीक्षण-योग्य रूप में कहना होगा, (ख) विफल परीक्षणों को स्वीकार करना होगा, और (ग) कैलेंडर-गणित, मौसम-लोकविज्ञान और फल-कथन को अलग-अलग मूल्यांकित करना होगा। यह माँग मुहूर्त-परंपरा के विरुद्ध नहीं है। यह उसे आधुनिक शोध-संवाद में सम्मानजनक स्थान दिलाने की शर्त है।

8. तुलनात्मक विमर्श: प्रासंगिकता का त्रि-स्तरीय निर्णय

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर मुहूर्त के दावों को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है।

श्रेणी I: परीक्षण-योग्य और आंशिक रूप से समर्थित अंश। इसमें ऋतु और वर्षा-आरंभ के अनुसार बुवाई का समय, मौसम-संकेतों का लोक-ज्ञान और पंचांग की खगोलीय गणना शामिल है। इन्हें कृषि-जलवायु विज्ञान के साथ जोड़कर प्रयोग में लाना उचित है [3,4,17,18,20]। यहाँ मुहूर्त की प्रासंगिकता वास्तविक है, पर उसका स्वरूप "कैलेंडर-आधारित कृषि-निर्णय" का है।

श्रेणी II: परीक्षण-योग्य, पर साक्ष्य अपुष्ट या मिश्रित। इसमें चंद्र-चरण और उपज, चंद्र-चक्र और बाजार-प्रतिफल, तथा कुंडली-आधारित फल शामिल हैं। चंद्र-चक्र के कुछ संकेत साक्ष्य में हैं [21,22,24,25], पर उनकी व्याख्या, स्थिरता और आर्थिक मूल्य अनिश्चित है। कुंडली-आधारित फल के पक्ष में नियंत्रित अध्ययन में समर्थन नहीं मिला [23]। इन अंशों के लिए "प्रमाणित" के स्थान पर "परिकल्पना" शब्द उपयुक्त है।

श्रेणी III: अपरीक्षित या परीक्षण-अयोग्य, पर सामाजिक कार्य-युक्त। इसमें शुभ-अशुभ का आध्यात्मिक आयाम, अनुष्ठान का मनोवैज्ञानिक आश्वासन और समुदाय की सांस्कृतिक निरंतरता शामिल है [7,8,9,29,30,31]। इसका मूल्यांकन वैज्ञानिक सत्यता से नहीं, कार्य-क्षमता और सांस्कृतिक मूल्य से किया जाना चाहिए।

तुलनात्मक दृष्टि से कृषि में मुहूर्त की प्रासंगिकता व्यापार की तुलना में अधिक ठोस आधार रखती है, क्योंकि कृषि की प्राकृतिक चक्रों पर प्रत्यक्ष निर्भरता काल-निर्णय को भौतिक आधार देती है [17,18]। व्यापार में काल-निर्णय का आधार बाजार-मनोविज्ञान और सामूहिक व्यवहार अधिक है [26,27,28,29]। यह अंतर नीति-निर्माताओं और कृषि-प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए व्यावहारिक महत्व रखता है: कृषि-प्रसार में पंचांग-आधारित ज्ञान को मौसम-पूर्वानुमान से जोड़ना सार्थक है, जबकि व्यापार में मुहूर्त का पालन व्यक्तिगत और सांस्कृतिक विकल्प का विषय है।

9. परीक्षण-योग्य परिकल्पनाएँ और प्रस्तावित शोध-रूपरेखा

अनुभवजन्य जाँच के लिए निम्न परिकल्पनाएँ प्रस्तावित हैं (ये परीक्षण-पूर्व परिकल्पनाएँ हैं, निष्कर्ष नहीं):

- **H1:** पंचांग-आधारित बुवाई-तिथि और स्थानीय वर्षा-आरंभ-आधारित बुवाई-तिथि के बीच औसत उपज-अंतर शून्य नहीं है (कृषि-खेत प्रयोग)।
- **H2:** जिन क्षेत्रों में पारंपरिक नक्षत्र-आधारित बुवाई-कैलेंडर वर्षा-आरंभ से सुसंगत है, वहाँ उसका पालन उपज-जोखिम घटाता है (ऑरलोव-शैली सत्यापन [20])।
- **H3:** भारतीय शेयर-बाज़ार में विशिष्ट शुभ तिथियों (जैसे वार्षिक विशेष कारोबार-सत्र) के आसपास के प्रतिफल और मात्रा में सांख्यिकीय रूप से सार्थक विचलन पाया जाता है (घटना-अध्ययन; डेटा-माइनिंग-नियंत्रण सहित [24,25])।
- **H4:** मुहूर्त का पालन करने वाले किसान और व्यापारी निर्णय-चिन्ता के स्तर पर अधिक आश्वस्त पाए जाते हैं (मनोमितीय सर्वेक्षण [29,30,31])।

प्रस्तावित डिज़ाइन। कृषि के लिए यादृच्छिक खंड-प्रयोग (randomized block design) में चयनित फसलों की बुवाई तीन समूहों में की जाए: पंचांग-आधारित, मौसम-आधारित और किसान की परंपरागत तिथि। प्रत्येक के लिए उपज, लागत और जोखिम मापा जाए। व्यापार के लिए घटना-अध्ययन पद्धति से शुभ तिथियों के आसपास की प्रतिफल-असामान्यताओं का अनुमान लगाया जाए, और बहु-परीक्षण सुधार लागू किया जाए। सामाजिक-मनोवैज्ञानिक पक्ष के लिए सत्यापित पैमानों वाला सर्वेक्षण और गुणात्मक साक्षात्कार संयुक्त रूप से उपयोग किए जाएँ। सभी चरणों में पूर्व-पंजीकृत (pre-registered) परिकल्पनाएँ और खुली डेटा-नीति अपनाई जानी चाहिए, ताकि पुनरुत्पादन संभव हो और शोध-नैतिकता का पालन हो [12]।

10. नीतिगत एवं व्यावहारिक निहितार्थ

- **कृषि-प्रसार:** पंचांग और स्थानीय लोक-मौसम ज्ञान को आधुनिक मौसम-सूचना के साथ संकलित करने वाले प्रसार-मॉड्यूल बनाना लाभदायक हो सकता है [17,18,20]।
- **शास्त्र-संरक्षण:** कृषि-पराशर और वृक्षायुर्वेद जैसे ग्रंथों के पाठ-शुद्ध, टीका-सहित और बहुभाषी संस्करणों का संरक्षण कृषि-विरासत शोध के लिए आवश्यक है [4,5]।
- **शिक्षा:** ज्योतिष-विद्या के प्रशिक्षण में परीक्षण-योग्य और अपरीक्षित अंशों के भेद, सांख्यिकीय साक्षरता और शोध-नैतिकता का समावेश उपयोगी होगा [12,14]।
- **उपभोक्ता-संरक्षण दृष्टि:** किसी भी व्यक्ति को वित्तीय या कृषि-निर्णय के लिए केवल ज्योतिषीय फल पर निर्भर होने की सलाह न दी जाए, जबकि सांस्कृतिक अनुष्ठान के रूप में उसकी स्वतंत्रता का सम्मान हो [29,32]।

11. अध्ययन की सीमाएँ

- यह विवरणात्मक समीक्षा है, औपचारिक व्यवस्थित समीक्षा या मेटा-विश्लेषण नहीं, इसलिए चयन-पूर्वाग्रह की संभावना है।
- शास्त्रीय ग्रंथों का पठन मुख्यतः उपलब्ध संपादित, अनूदित संस्करणों पर आधारित है, पांडुलिपि-स्तर की तुलना पर नहीं [4,5,6]।
- उद्धृत अनुभवजन्य अध्ययन (चंद्र-चक्र, मौसम आदि) मुहूर्त पर प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं हैं। उनसे निकाला गया संबंध अप्रत्यक्ष (inferential) है।
- 2024 तक की प्रकाशन-सीमा के कारण परवर्ती शोध समाहित नहीं हो पाए।

- भारतीय किसानों और व्यापारियों के बीच मुहूर्त-व्यवहार का प्राथमिक क्षेत्र-डेटा इस अध्ययन में संग्रहित नहीं है, इसलिए यह अध्ययन परिकल्पना-निर्माणकारी है, निष्कर्ष-स्थापनकारी नहीं।
- वित्त-साहित्य के कैलेंडर-प्रभाव समय और बाज़ार के साथ बदल सकते हैं [25]।

12. निष्कर्ष

कृषि और व्यापारिक गतिविधियों में मुहूर्त शास्त्र की प्रासंगिकता न तो पूर्णतः स्वीकार्य है, न पूर्णतः अस्वीकार्य। यह एक स्तरीकृत प्रश्न है।

पहला, मुहूर्त की मूल अंतर्दृष्टि (कर्म-आरंभ के काल का महत्त्व) कृषि-विज्ञान में स्वतंत्र रूप से सत्यापित है [17,18]। पारंपरिक खगोल-आधारित कृषि-नियमों के कुछ उदाहरण वैज्ञानिक परीक्षण में तर्कसंगत भौतिक आधार भी रखते पाए गए हैं [20]। यह कृषि में मुहूर्त-परंपरा का सबसे ठोस और सुरक्षित पक्ष है।

दूसरा, चंद्र-चक्र और बाज़ार-प्रतिफल या उपज के बीच कुछ संबंधों की रिपोर्टें हैं [21,22,24,25], पर उनकी व्याख्या मनोदशा-आधारित है, और वे विशिष्ट नक्षत्र-तिथि-नियमों की पुष्टि नहीं करतीं। कुंडली-आधारित फल-कथन के पक्ष में नियंत्रित अध्ययन में समर्थन नहीं मिला [23]।

तीसरा, मुहूर्त का मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्य (अनिश्चितता में आत्मविश्वास, समन्वय और सांस्कृतिक निरंतरता) स्वतंत्र रूप से मूल्यवान है [7,8,9,29,30,31]।

चौथा, इसलिए आधुनिक संदर्भ में सर्वाधिक उपयुक्त मार्ग "परंपरा का साक्ष्य-आधारित पुनर्पाठ" है: पंचांग की खगोलीय गणना और मौसम-लोकविज्ञान को वैज्ञानिक सहयोग से परिष्कृत करना, अपरीक्षित अंशों को परिकल्पना के रूप में स्वीकारना, और सांस्कृतिक अनुष्ठान को निर्णय-प्रक्रिया का अनिवार्य नहीं, सहायक अंग मानना।

अंततः यह अध्ययन आह्वान करता है कि मुहूर्त पर बहस आस्था बनाम उपहास के द्वंद्व से निकलकर प्रमाण, पद्धति और पारदर्शिता के धरातल पर आए। क्षेत्र-आधारित, पूर्व-पंजीकृत और पुनरुत्पादन-योग्य अनुसंधान ही यह तय कर सकता है कि इस प्राचीन काल-विद्या का कितना अंश आधुनिक कृषि और वाणिज्य के लिए सचमुच प्रासंगिक है।

संदर्भ

1. Kane PV. History of Dharmaśāstra. Vol. 5, Part 1. Poona: Bhandarkar Oriental Research Institute; 1958.
2. Pingree D. Jyotiḥśāstra: astral and mathematical literature. Wiesbaden: Otto Harrassowitz; 1981.
3. Kangle RP. The Kauṭīliya Arthaśāstra. Part 2: an English translation with critical and explanatory notes. Bombay: University of Bombay; 1972.
4. Sadhale N, editor and translator. Krishi-Parashara (Agriculture by Parashara). Agri-History Bulletin No. 2. Secunderabad: Asian Agri-History Foundation; 1999.
5. Sadhale N, translator. Surapala's Vrikshayurveda (The Science of Plant Life). Agri-History Bulletin No. 1. Secunderabad: Asian Agri-History Foundation; 1996.
6. Bhat MR, translator. Varāhamihira's Br̥hat Saṃhitā. Delhi: Motilal Banarsidass; 1981.
7. Ahluwalia PS. Bhasha, sanskar aur sanskriti ka samajshastriya vishleshan [A sociological analysis of language, sanskar and culture]. Shabdsagar. 2023;35-41.

8. Ahluwalia PS. Bhasha aur sanskriti ke vikas mein sanskaron ka mahatva: ek samajshastriya adhyayan [The importance of sanskar in the development of language and culture: a sociological study]. Shabdsagar. 2024:1-8.
9. Ahluwalia PS. Sanskar aur sanskriti: samajshastra ke pariprekshya mein adhyayan [Sanskar and culture: a study from a sociological perspective]. Shabdsagar. 2023:17-25.
10. Page MJ, McKenzie JE, Bossuyt PM, Boutron I, Hoffmann TC, Mulrow CD, et al. The PRISMA 2020 statement: an updated guideline for reporting systematic reviews. *BMJ*. 2021;372:n71.
11. Tricco AC, Lillie E, Zarin W, O'Brien KK, Colquhoun H, Levac D, et al. PRISMA extension for scoping reviews (PRISMA-ScR): checklist and explanation. *Ann Intern Med*. 2018;169(7):467-73.
12. Ahluwalia PS. Ethical issues in social science research. *Shodh Patra: Int J Multidiscip Stud*. 2024:1-8.
13. Ahluwalia PS. Plagiarism: detection techniques and tools. *Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit*. 2024:1-11.
14. Thagard PR. Why astrology is a pseudoscience. *PSA: Proc Bienn Meet Philos Sci Assoc*. 1978;1978(1):223-34.
15. Sewell R, Dikshit SB. *The Indian calendar*. London: Swan Sonnenschein; 1896.
16. Saha MN, Lahiri NC. *Report of the Calendar Reform Committee*. New Delhi: Council of Scientific and Industrial Research; 1955.
17. Sacks WJ, Deryng D, Foley JA, Ramankutty N. Crop planting dates: an analysis of global patterns. *Glob Ecol Biogeogr*. 2010;19(5):607-20.
18. Gadgil S, Seshagiri Rao PR, Narahari Rao K. Use of climate information for farm-level decision making: rainfed groundnut in southern India. *Agric Syst*. 2002;74(3):431-57.
19. Ahluwalia PS. Bhasha aur sanskriti ke vikas mein sanskaron ka mahatva: ek samajshastriya adhyayan. Shabdsagar. 2024:1-8.
20. Orlove BS, Chiang JCH, Cane MA. Forecasting Andean rainfall and crop yield from the influence of El Niño on Pleiades visibility. *Nature*. 2000;403(6765):68-71.
21. Kollerstrom N, Staudenmaier G. Evidence for lunar-sidereal rhythms in crop yield: a review. *Biol Agric Hortic*. 2001;19(3):247-59.
22. Zürcher E, Cantiani MG, Sorbetti-Guerri F, Michel D. Tree stem diameters fluctuate with the lunar tides and perhaps with geomagnetic activity. *Protoplasma*. 1998;204(3-4):161-7.
23. Carlson S. A double-blind test of astrology. *Nature*. 1985;318(6045):419-25.
24. Dichev ID, Janes TD. Lunar cycle effects in stock returns. *J Priv Equity*. 2003;6(4):8-29.
25. Yuan K, Zheng L, Zhu Q. Are investors moonstruck? Lunar phases and stock returns. *J Empir Finance*. 2006;13(1):1-23.
26. Hirshleifer D, Shumway T. Good day sunshine: stock returns and the weather. *J Finance*. 2003;58(3):1009-32.
27. Saunders EM Jr. Stock prices and Wall Street weather. *Am Econ Rev*. 1993;83(5):1337-45.
28. Kamstra MJ, Kramer LA, Levi MD. Winter blues: a SAD stock market cycle. *Am Econ Rev*. 2003;93(1):324-43.
29. Malinowski B. *Magic, science and religion and other essays*. Boston: Beacon Press; 1948.
30. Langer EJ. The illusion of control. *J Pers Soc Psychol*. 1975;32(2):311-28.
31. Damisch L, Stoberock B, Mussweiler T. Keep your fingers crossed! How superstition improves performance. *Psychol Sci*. 2010;21(7):1014-20.
32. Tversky A, Kahneman D. Judgment under uncertainty: heuristics and biases. *Science*. 1974;185(4157):1124-31.